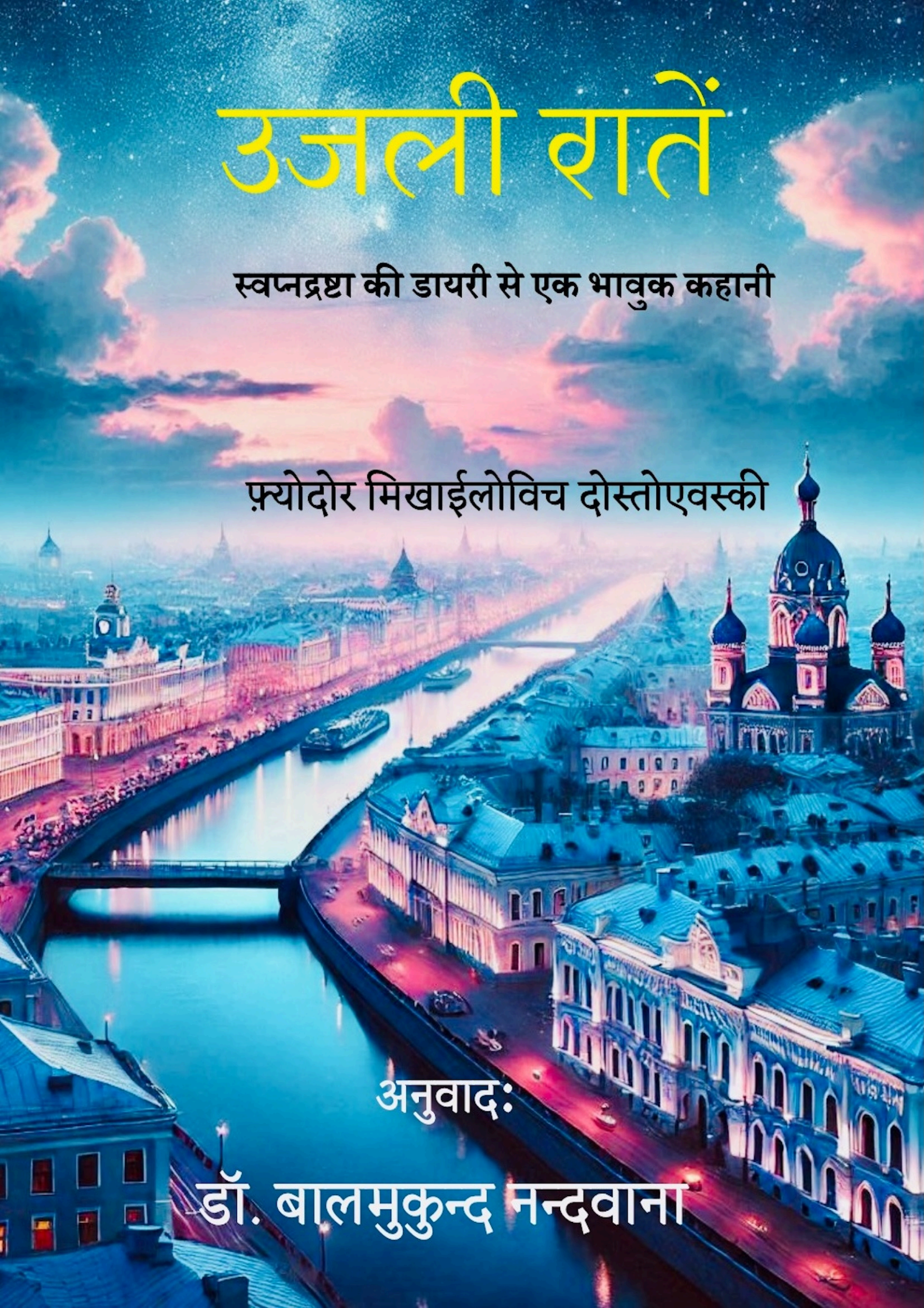

उजली रातें

स्वप्नद्रष्टा की डायरी से एक भावुक कहानी

फ़्योदोर मिखाईलोविच दोस्तोएवस्की

अनुवादः

डॉ. बालमुकुन्द नन्दवाना

उजली रातें

स्वप्नद्रष्टा की डायरी से एक भावुक कहानी

फ़्योदोर मिखाईलोविच दोस्तोएवस्की

अनुवाद:

डॉ बालमुकुन्द नन्दवाना

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: दिसंबर, 2024

© डॉ बालमुकुन्द नन्दवाना

पहली रात

वह एक अद्भुत रात थी, प्रिय पाठक, ऐसी रात जो तब ही संभव है जब हम युवा हों। आसमान तारों से जगमगाता हुआ, इतना चमकदार कि उसकी ओर देखकर कोई भी स्वयं से पूछे बिना नहीं रह सकता था कि क्या वास्तव में इस आसमान के नीचे बदमिज़ाज और शातिर लोग रह सकते थे। प्रिय पाठक, यह एक युवा प्रश्न भी है, बहुत युवा, ईश्वर इसे तुम्हारे हृदय में बार-बार लाये!...बदमिज़ाज और शातिर लोगों के बारे में बात करते हुए मैं मेरी उस दिन की नैतिक स्थिति को याद किए बिना नहीं रह सकता हूँ। सुबह से ही मैं एक अजीब सी मायूसी से त्रस्त था। यकायक मुझे लगा कि मैं अकेला था, कि हर कोई मुझे छोड़कर मुझ से दूर जा रहा था। निश्चित रूप से, कोई भी यह पूछने का हकदार है वह 'हर कोई' कौन था। हालांकि मैं करीब आठ वर्षों से पीटर्सबर्ग में रह रहा था, यहाँ मेरा शायद ही कोई परिचित था। लेकिन मैं परिचितों से क्या चाहता था? मैं पीटर्सबर्ग से, जैसा वह था, भलीभांति परिचित था; इसलिए जब सारा पीटर्सबर्ग सामान समेट कर अपने समर-विला में चला गया मैंने महसूस किया मानो वे सभी मुझे छोड़ कर जा रहे थे। मैं अकेला रह जाने के कारण डर गया था, और मैं तीन दिनों तक शहर में गहरी निराशा में इधर-उधर घूमता रहा, नहीं जानते हुए मुझे स्वयं के साथ क्या करना चाहिए था। मैं नेव्स्की गया, बगीचों के चक्कर लगाए, बांध पर टहलता रहा,

लेकिन वहाँ मुझे एक भी चेहरा ऐसा दिखाई नहीं दिया जिसे मैं साल भर से एक निश्चित समय अथवा स्थान पर देखने का अभ्यस्त था। वे बेशक मुझे नहीं जानते हैं, लेकिन मैं उन्हें जानता हूँ। मैं उन्हें करीब से जानता हूँ, मैंने उनके चेहरों का काफी अध्ययन किया है, और मैं खुश होता हूँ जब वे प्रसन्नचित्त होते हैं, और खिन्न होता हूँ जब वे उदास होते हैं। मेरी एक बुजुर्ग व्यक्ति से मित्रता सी हो गयी है, जिनसे मैं हर मुबारक दिन पर फोंटंका में मिलता हूँ, बहुत गंभीर, ध्यानमग्न चेहरा; वे सदैव अपने आप में बड़बड़ाते रहते हैं और अपनी बायीं बाँह घुमाते रहते हैं, और अपने दायें हाथ में वे छड़ी को पकड़े रहते हैं, जिसकी मूठ सोने की है। यहाँ तक कि वे मुझे नोटिस करते हैं और मुझ में हार्दिक रुचि दिखाते हैं। यदि मैं फोंटंका में निश्चित समय पर उस स्थान पर नहीं होता हूँ, मुझे यकीन है वे हताशा का अनुभव करते हैं। हाँ, इस तरह से हम एक दूसरे का अभिवादन करते हैं, खासतौर पर तब जब हम दोनों अच्छे मूड में होते हैं। उस दिन, जब हम पिछले दो दिनों तक नहीं मिले थे और तीसरे दिन मिले हमारे हैट वास्तव में एक दूसरे को छू रहे थे, परन्तु, इसका एहसास होते ही, हमने अपने हाथ नीचे कर लिए और दिलचस्प भरी नज़रें मिलाते हुए एक दूसरे के पास से गुजरे।

मैं यहाँ के मकानों से भी परिचित हूँ। जब मैं गुजरता हूँ वे मुझे देखने के लिए खिड़कियों से बाहर निकलकर गलियों में आगे दौड़ते दिखाई देते हैं, और कहते हैं: "शुभ प्रभात! आप कैसे हैं? मैं बिलकुल ठीक हूँ, भगवान का शुक्र है, मई माह में

मुझे एक नई मंजिल मिल जाएगी," अथवा, "आप कैसे हैं, कल मुझे फिर से सजाया जाएगा," अथवा, "मैं लगभग जल गया था और बहुत डर गया था," इत्यादि-इत्यादि। उनमें मेरे पसंदीदा भी हैं, कुछ प्रिय मित्र हैं; उनमें से एक इस गर्मी में आर्किटेक्ट से उपचार का इरादा रखता है। मैं प्रतिदिन यह देखने जाऊँगा कि ऑपरेशन असफल न हो। भगवान न करे! हालांकि मैं हलके गुलाबी रंग के छोटे-से खूबसूरत मकान के साथ हुई घटना को कभी नहीं भूल पाऊँगा। वह बहुत ही आकर्षक छोटा-सा ईंट का मकान था, वह मेरी ओर बहुत सत्कार पूर्वक, और अपने बदसूरत पड़ोसियों की ओर इतने गर्व से देखता था कि जब भी मैं उधर से गुजरता मेरा हृदय आनंद से भर उठता था। पिछले सप्ताह मैं उस सड़क से गुजर रहा था और जब मैंने मेरे मित्र की ओर देखा मैंने एक दर्द-भरी फ़रियाद सुनी, "वे मुझ पर पीला रंग लगा रहे हैं!" दुर्जन! जंगली! उन्होंने कुछ नहीं छोड़ा था, न तो खंबों को और न ही कंगानियों को। और बेचारा मेरा मित्र कनारी चिड़िया जैसा पीला हो गया था। उसे देखकर उलटी करने को जी करता था। और आज दिन तक मैं मेरे अभागे–'आकाशीय साम्राज्य' के रंग में रंगे-कुरूप मित्र से मिलने का साहस नहीं जुटा पाया हूँ।

तो अब आप समझ गए, मैं किस प्रकार से पूरे पीटर्सबर्ग शहर से परिचित हूँ।

मैंने पहले उल्लेख किया है कि जब तक मुझे मेरी बेचैनी का कारण समझ में नहीं आया मैं पूरे तीन दिन तक चिंतित रहा था। मैं सड़क की निर्जनता से परेशान

था–यह चला गया था, वह चला गया था, और उस तीसरे का क्या हुआ था?-घर पर भी मैं अपने आपको सहज महसूस नहीं कर रहा था। दो रातों से मैं दिमागी कसरत करता रहा मेरे घर में क्या गलत अथवा बेतुका था। मैं इसको लेकर इतना असहज क्यों था। इस उलझन में मैंने अपनी गंदी हरी दीवारों की, मकड़ियों के जालों से भरी छत की, जिनकी वृद्धि को मेट्रोना ने बहुत ही सफलतापूर्वक प्रोत्साहित किया है, सावधानीपूर्वक जांच की। मैंने मेरे सारे फर्नीचर को, प्रत्येक कुर्सी को जांचा-परखा, कि क्या मुसीबत वही-कहीं थी (क्योंकि यदि एक भी कुर्सी अपने कल वाले स्थान पर नहीं होती है, मैं अपने आपे से बाहर हो जाता हूँ।) मैंने खिड़की की ओर देखा, लेकिन सब व्यर्थ... मेरी बेचैनी दूर नहीं हुई। मैंने मेट्रोना को बुलाकर उसे मकड़ी के जालों और फूहड़पन के लिए थोड़ी नसीहत दी; लेकिन वह मुझे बस विस्मय से निहारती रही और कुछ भी बोले बगैर चली गयी, और वह मकड़ी का जाला आज तक अपने स्थान पर आराम से लटक रहा है। आज सुबह ही मेरी समझ में आया आखिरकार क्या गलत था। आह! क्यों, वे मुझे छोड़ रहे हैं और अपने-अपने समर-विला में जा रहे हैं! अभिव्यक्ति की तुच्छता के लिए क्षमा करें, मैं शिष्ट भाषा के मूड में नहीं हूँ... क्योंकि हर कोई जो पीटर्सबर्ग में था छुट्टियां मनाने चला गया था अथवा जा रहा था; क्योंकि गरिमामय दिखाई देने वाला हर सम्माननीय व्यक्ति जिसने कैब ली वह तुरंत मेरी नजर में परिवार के एक सम्माननीय मुखिया के रूप में परिवर्तित हो गया, जो अपने रोजमर्रा के कामकाज के बाद,